शिवसहस्त्रनामावली

शिवसहस्त्रनामावली

प्रकाशक :-

प्रेमनाथ शास्त्री

मूल्य : 15 रु०

लक्ष्मी प्रिंटिंग वर्कस
लाल कुआं, देहली-6

पुष्पार्चन

इष्टदेव को सन्तुष्ट करने, मानसिक शान्ति, तथा हर मनोकामना सिद्धि के लिए पुष्पार्चन एक सरल तथा सुगम मार्ग है, हम जब भी चाहें- हर एक व्रत महोत्सव, पर्व अथवा जन्म दिन आदि पर जब हम कोई महान् यज्ञ करने में असमर्थ हूँ तो अवश्य पुष्पार्चन रूपी यज्ञ का प्रोग्राम बनायें।

विष्णु भगवान् ने शंकर भगवान् को सन्तुष्ट कराने के लिए **"सहस्त्रपुष्पार्चन्"** किया परन्तु अन्त में हजार पुष्प में एक कम होने पर भक्ति के आवेश में अपना नेत्रकमल हजारवें पुष्प के रूप में अर्पण किया, जिस के फलस्वरूप विष्णु को भगवान् शंकर से सुदर्शनचक्र प्राप्त हुआ।

पुष्पदन्ताचार्य ने फूल न मिलने पर फूलों के स्थान पर अपने 32 दांत पुष्पार्चन के रूप में अर्पण करते हुये महिम्नस्तोत्र के 32 श्लोकों का उच्चारण किया, भगवद्गीता में भगवान् कहते हैं **"पत्रं पुष्पं फलं तोयं"** इन प्रमाणों से स्पष्ट है पुष्पार्चन का पूजा विधान भारतीय पूजा क्रम में प्राचीन काल से प्रचलित है।

सस्त्रपुष्पार्चन विधिः-

इस पूजा में इष्ट देवता के सहस्रनाम के साथ आरम्भ में **"ॐ"** और अन्त में **"नमः"** जोड़कर एक-एक नाम से इष्टदेव पर पुष्प चढ़ाया जाता है, इस पूजा के लिये पुष्प पर्याप्तमात्रा में होने चाहिये (पुष्प की पत्तियाँ अलग अलग करके पूजा में प्रयोग न करें, फूल ख़ण्डित ना हो) पुष्पार्चन के लिये किसी कमरे में स्वच्छ आसन बिछायें, जहाँ सभी भक्तजन सामूहिक रूप से पूजा में सम्मिलित हो सकें, जो पूजा का मुख्यकर्त्ता अथवा यजमान होगा उसको चाहिये पद्मासन में बैठकर अपने सामने इष्टदेव की मूर्ति उस ढंग से रखे ताकि आप को फूल अर्पण करने में कोई रुकावट न पड़े पूजा के आरम्भ पर रत्नदीप तथा धूप आदि जलाकर इष्टदेव की मूर्ति को तिलक लगाकर फूलों की मालाओं से सजाइये, पहले आप (यजमान) धूपदीप करे जो इसी पुस्तक में अलग दर्ज है, पूजा में सम्मिलित होने वालों में से जो सहस्रनामावली का उच्चारण कर सके एक एक नाम के

आरम्भ में **"ॐ"** और अन्त में **"नमः"** जोड़कर इष्टदेवता पर फूल चढ़ायें जैसे **ॐ महाविद्यायै: नमः, ॐ जगत् मात्रेः नमः "ॐ नारायणाय नमः" ॐ शिवाय नमः"** जो भक्तजन पूजा में सम्मिलित होंगे वे भी हरनाम के साथ **"नमः"** का सामूहिक रूप से उच्चारण किया करें। **यज्ञ में स्वाहा, पुष्पार्चन में नमः** का प्रयोग होता है।

हर 100 वीं पुष्पांजलि अर्पण करने के समय इष्टदेव का वैदिक मन्त्र अवश्य पढें जो इसी पुस्तक में दर्ज है।

हजारवीं पुष्पाँजलि डालते समय सभी भक्त खड़े होकर वैदिकमन्त्र और इष्टदेव का कोई श्लोक पढ़कर अन्तिम पुष्पांजलि श्रद्धा से अर्पण करके तर्पण करें–जैसा कि पूजाविधि में दर्ज है आरती आदि करके प्रप्युन करके प्रसाद बाटें।

धूपदीप विधिः

पूजा के लिये रखे गये निर्माल्य के पात्र में जल की धारा डालते हुये पढें :–
ॐ अस्य श्री-आसन-शोधन-मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ-ऋषिः सुतलं छन्दः, कूर्मो देवता-आसन-शोधने विनियोगः।

पृथ्वी माता को नमस्कार करते हुए पढें :–**पृथ्विी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरू चासनम्।**
आसन के रूप में पृथ्वी माता को दर्भ अथवा फूल अर्पण करते हुये पढें :–
ध्रुवा द्यौर्-ध्रुवा-पृथ्वी, ध्रवासः पर्वता इमे। ध्रुवं विश्वम्-इदं जगत् ध्रुवो राजा विशाम्-असि। तिलक-फूल-अर्घ्य चढाते हुये पढें :–
प्रीं पृथिव्यै आधारशक्त्यै समालभनं गन्धो नमः अर्घो नमः पुष्पं नमः। नमस्कार करते हुए पढें :– **शुक्लाम्बरधंर विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्न-वदनं ध्याये सर्व-विघ्नोप-शान्तये। अभि-प्रीतार्थ-सिद्धचर्थं पूजितो यः सैरैर्-अपि। सर्व विघ्नच्छिदे तस्मै गणाधि-पतये नमः।**

गुरुः-ब्रह्मा, गुरुः-विष्णुः गुरुः-साक्षात्-महेश्वरः। गुरुर्-एव जगत्सर्वं तस्मै श्री गुरु-वे नमः।। ॐ गुरवे नमः, परम गुरवे

नमः, पर-मेष्ठिने गुरवे नमः, परमा-चार्याय नमः आदि सिद्धिभ्यो नमः

अंग न्यास-कीजिये अंगन्यास करके चारों दिशाओं की ओर तिल फँकते हुये पढें:-

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिता, ये भूता विघ्नकर्तार:-ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।

प्राणायाम कीजिये, प्राणायाम करके मुँह और पैरों को छिडकते हुये पढें :-

तीर्थे स्नेयं तीर्थम्-एव समानानां भवति मानः, शंस्योर्-अर-रुषो धूर्तिः प्राणङ्-मर्त्यस्य रक्षाणो ब्रह्मणस्पते।

अनामिका अंगुली के ऊपर वाले पर्व पर पवित्र-धारण करते हुये पढें :-

वसोः पवित्रम्-असि शतधारं वसूनां पवित्रम्-असि, सहस्त्र-धारम्-अयक्ष्मा वः प्रजया संसृजामि रायस्पोषेण बहुला भवन्तीः। जंग चावल आदि लाकर तिलक करना

अपने आपको तिलक अक्षत धूप चढ़ाते हुये पढें :-

परमात्मने पुरु-षोत्तमाय पंचभूतात्मकाय विश्वात्मने मन्त्रनाथाय आधार-शक्त्यै समाल-भनं गन्धो नमः-अर्घो नमः पुष्पं नमः।

चोंग (धीप) को तिलक अक्षत फूल चढाते हुये पढें :-

"स्वप्रकाशो-महादीपः सर्वत-स्तिमिरा-पहः। प्रसीद नम गोविन्द दीपोयं प्रतिकल्पितः। भो दीप देव-रूवपस्त्वं कर्म-समाप्तिः यावत् स्यात्-तावत् त्वं स्थिरो भव।

सूर्यदेवता के निमित्त निर्माल्यपात्र में तिलक अक्षत फूल डालते हुये पढें :-

यत्रास्ति माता न पिता न बन्धुः-भ्रतापि नो यत्र सुहृत्-जनश्च न ज्ञायते यत्र दिनं न रात्रिः-तत्रात्म-दीपं शरणं प्रपद्ये। आत्मने नारायणाय आधार-शक्त्यै दीप-धूप-संकल्पात्-सिद्धिर-अस्तु दीपो नमः धूपो नमः। ॐ तत्-सत्-ब्रह्म अद्यतावत्-तिथौ-अद्य .... मासस्य ..... पक्षस्य तिथौ ..... वासरे दीपोनमः धूपोनमः।

शिवसहस्त्रनाम स्वाहाकार पूजन विधिः

अग्नि में फूल डालते हुये पढें :-

ॐ उपमन्युर्-उवाच-**यतो लोकाः सम्भवन्ति न भवन्ति यतः पुनः। सर्व-भूतात्मभूतस्य हरस्यामित-तेजसः अष्टोत्तर-सहस्त्रं तु नाम्नां शर्वस्य मे श्रृणु। यत्-श्रुत्वा मनुजश्रेष्ठः सर्वान्-कामान्-अवाप्स्यति।**

तर्पण करते हुये पढें :-

अस्य श्रीशिव-सहस्त्रनाम-स्तवराजस्य तुण्डि-ॠषिः, अनुष्टप्, च्छन्दः, श्रीशिवः परमात्मादेवता आत्मनो वांग्मनः कायोपार्जित-पाप निवारणार्थ शिवप्रीत्यर्थ होमे पुष्पार्चने वा विनियोगः। (अगन्यासः)

"ॐ नमः शिवाय" मन्त्रः- ॐ हृदयाय नमः "न" शिरसि स्वाहा "मः" शिखायै वषट् "शि" कवचाय हूँ "वा" नेत्राभ्यां वौषट्, "य" अस्त्राय फ्ट।

(करन्यासः) **ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः, "न" तर्जनीभ्यां नमः 'मः' मध्यमाभ्यां नमः, "शि" अनामिकाभ्यां नमः, "वा" कनिष्ठकाभ्यां नमः "य" करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।**

प्राणायाम करके फूल हाथ में लेकर (ध्यान) पढिये :-

देवं सदा-कलश-सोमकरं त्रिनेत्रं, पद्मासनं च वरदाभयदं सुशुभ्रम्-शंखा-भया-ब्जवर-भूषितया च देव्या, वामें-कितं शमन-भंगहरं नमामि।

आहुति डालिये :-

तत्-पुरुषाय विद्महे स्वाहा, महादेवाय धीमहि स्वाहा, तन्नः शिवः प्रचोदयात्-स्वाहा।

तत्-पुरुषाय विद्महे, महादेवाय धीमहि स्वाहा, तन्नः शिवः प्रचोदयात्-स्वाहा।

तत्-पुरुषाय विद्महे, महादेवाय धीमहि, तन्नः शिवः प्रचोदयात्-स्वाहा।

अब सावधानी से दोनों आहुति डालने वाला और यजमान एक एक नाम से प्रज्वलित अग्नि में आहुति डालें। हर एक नाम के आरम्भ में 'ॐ' तथा अन्त में 'नमः' शब्द का उच्चारण करें। ऐसे ही क्रमशः 100वी, 200वीं, 300वीं आहुति डालने से पूर्व 'स्रुक' (जिस में एक रन्ध्र होता है) से 'स्रुव' को घी से चार बार स्पर्श करते हुये पढ़ें 'तेजोसि शुक्रमसि ज्योतिरसि धमासि' पहले निचले रन्ध्र को फिर दो बार ऊपर के रन्ध्र को, फिर स्रुव के निचले रन्ध्र को एक बार स्पर्श करके, स्रुव पर श्रीफल, कन्द या अखरोट रखकर यवतिल की भी अंजलि हाथ में लेकर वैदिक मन्त्र जो कि इसी पुस्तक में स्तुति के रूप में दर्ज है हर 100वें नाम की आहुति डालें। अन्तिम यानी 999 वी आहुति तक अग्नि में आहुति डालकर अन्त में फूल अग्नि में डालते हुये पढ़ें :-

तत्-पुरुषाय विद्महे, महादेवाय धीमहि तन्नः शिवः प्रचोदयात्-स्वाहा। अष्टोत्तर सहस्त्रेण जप्यमानस्य शंकर यथाभीष्टं ददत्याशु प्रयतस्य न संशयः, इति महाभारते शान्ति पर्वाणि शिवसहस्त्रनामस्तुतिः शिवा-र्पणम्-अस्तु।

तर्पणः –

अनेन-शिवसहस्त्र-नाम-स्वाहाकरहोमेन भगवान् भवः देवः शर्वः देवः, रुद्रः देवः, पशुपतिदेवः, उग्रः देवः, भीमः देवः महादेवः, ईशानः देवः, ईश्वरः देवः, उमासहितः शिवः, पर्वती सहितः परमेश्वरः प्रीयतां प्रीतोस्तु।

शिवस्तुतिः

ध्यायेत्-नित्यं महेशं रजत-गिरिनिभं चारु-चन्द्रावतंसम्
रत्ना-कल्पो-ज्ज्वलांगं परशु-मृग-वरा-भीति-हस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतम्-अमर-गणै-र्व्याघ्र-कृत्तिं वसानं
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिल-भयं-हरं प्रंचवक्त्रं त्रिनेत्रम् (1) देवं

सुधा-कलश-सोम-करं त्रिनेत्रं, पद्मासनं च वरदाऽभयदं सुशुभ्रम्
शंखाऽभया-ब्ज-वरभूषितया च देव्या, वामें-कितं
शमन-भंगहरंनमामि (2) अहं पापी पाप-क्षपण-निपुणः शंकर
भवान् अहं भीतो भीताऽभय-वितरणे ते व्यसनिता अहं दीनो
दीनोद्धरण-विधि-सज्ज-स्त्वम्-इतरत् न जानेहं वक्तुं कुरु
सकल शोच्ये मयि कृपाम् (3) महिम्नः पारं ते परमविदुषो
यद्य-सदृशी स्तुति-र्ब्रह्मादीनाम्-अपि तदवसन्नास्त्वयि गिरः
अथावाच्यः सर्वः स्वमति-परिणामा-वधिगृणन् ममाप्येष-स्तोत्रे
हर निरपवादः परिकरः (4) रथः क्षोणी यन्ता शत-धृतिर्-अगेन्द्रो
धनुरथो रथांगे चन्द्रार्कौ रथ-चरण पाणिः शर इति दिधक्षोस्ते
कोयं त्रिपुर-तृणम्-आडम्बर-विधि विधेयैः क्रीडन्तो न खलु
परतन्त्राः प्रभुधियः (5) हरिस्ते साहस्त्रं कमल-बलिम्-आधाय
पदयो-र्यत्-एकोने तस्मिन्-निजमुदहरत्-नेत्रकमलम्। गतो
भक्त्युद्रेकः परिणतिम्-असौ चक्रवपुषा त्रयाणां रक्षायै त्रिपुरहर!
जागर्ति जगताम् (6) वपुष्प्रादुर्भावात्-अनुमितम्-इदं जन्मनि पुरा
पुरारे ! नैवाहं क्वचित्-अपि भवन्तं प्रणतवान् नमन्-मुक्तः
सम्प्रत्य-तनुर्-अहम्-अग्रे-प्यनतिमान् महेश ! क्षन्तव्यं
तत्-इदम्-अपराध-द्वयम्-अपि (7) कर्पूरगौरं करुणावतारं
संसार-सारं भुजगेन्द्र हारम् सदा रमन्तं हृदयारबिन्दे भवं भवानी
सहितं नमामि (8) पुष्पाणि सन्तु तव देव मत्-इन्द्रियाणि
धूपोगुरु-र्वपुर्-इदं हृदयं प्रदीपः। प्राणा हवींषि करणानि
नवाक्षातास्ते पूजाफलं व्रजतु साम्प्रतम्-एष जीवः (9) जन्मानि
सन्तु ममदेव शताधिकानि माया च विशतु चित्तम्-अबोध-हेतुः।
किंच क्षणार्धम्-अपि त्वत् चरणा विन्दात् माऽपैतु मे हृदयम्-ईश!
नमो नमस्ते (10)

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

अथ शिवसहस्रनामावली: ।

ॐ स्थिराय स्वाहा

ॐ स्थाणवे स्वाहा

ॐ प्रभवे स्वाहा

ॐ भानवे स्वाहा

ॐ प्रभवाय स्वाहा

ॐ वरदाय स्वाहा

ॐ वराय स्वाहा

ॐ सर्वात्मने स्वाहा

ॐ सर्वविख्याताय स्वाहा

ॐ सर्वस्मै स्वाहा

ॐ सर्वाकरोद्भवाय स्वाहा

ॐ जटिने स्वाहा

ॐ चर्मिणे स्वाहा

ॐ शिखण्डिने स्वाहा

ॐ सर्वाङ्गाय स्वाहा

ॐ सर्वभावनाय स्वाहा

ॐ हराय स्वाहा

ॐ हरिणाक्षाय स्वाहा

ॐ सर्वभूतहराय स्वाहा

ॐ विभवे स्वाहा

ॐ प्रवृत्तये स्वाहा

ॐ निवृत्तये स्वाहा

ॐ नियताय स्वाहा

ॐ शाश्वताय स्वाहा

ॐ ध्रुवाय स्वाहा

ॐ श्मशानचारिणे स्वाहा

ॐ भगवते स्वाहा

ॐ खचराय स्वाहा

ॐ गोचरोद्भवाय स्वाहा

ॐ अभिवाद्याय स्वाहा

ॐ महाकर्मणे स्वाहा

ॐ तपस्विने स्वाहा

ॐ भूतभावनाय स्वाहा

ॐ उन्मत्तवेशप्रच्छन्नाय स्वा॰

ॐ सर्वलोकपितामहाय स्वा॰

ॐ महारूपाय स्वाहा

ॐ महाकायाय स्वाहा

ॐ वृषरूपाय स्वाहा

ॐ महायशसे स्वाहा

ॐ महात्मने स्वाहा

ॐ सर्वभूतात्मने स्वाहा

ॐ विश्वरूपाय स्वाहा

ॐ महाहनवे स्वाहा

ॐ लोकपालाय स्वाहा

ॐ अन्तर्हितात्मने स्वाहा

ॐ प्रसादाय स्वाहा

ॐ हयगर्दभये स्वाहा

ॐ पवित्राय स्वाहा

ॐ महते स्वाहा

ॐ नियमाय स्वाहा

ॐ नियमाश्रयाय स्वाहा

ॐ सर्वकर्मणे स्वाहा

ॐ स्वयम्भूताय स्वाहा

ॐ आदये स्वाहा

ॐ आदिकराय स्वाहा

ॐ निधये स्वाहा

ॐ सहस्त्राक्षाय स्वाहा

ॐ विशालाक्षाय स्वाहा

ॐ सोमाय स्वाहा

ॐ नक्षत्रसाधकाय स्वाहा

ॐ चन्द्राय स्वाहा

ॐ सूर्याय स्वाहा

ॐ शनये स्वाहा

ॐ केतवे स्वाहा

ॐ ग्रहाय स्वाहा

ॐ ग्रहपतये स्वाहा

ॐ वराय स्वाहा

ॐ अत्रये स्वाहा

ॐ अत्र्यानमस्कर्त्रे स्वाहा

ॐ मृगबाणार्पणाय स्वाहा

ॐ अनघाय स्वाहा

ॐ महातपसे स्वाहा

ॐ घोरतपसे स्वाहा

ॐ अदीनाय स्वाहा

ॐ दीनसाधकाय स्वाहा

ॐ संवत्सरकराय स्वाहा

ॐ मन्त्रिणे स्वाहा

ॐ प्रमाणाय स्वाहा

ॐ परमंतपसे स्वाहा

ॐ योगिने स्वाहा

ॐ याज्याय स्वाहा

ॐ महाबीजाय स्वाहा

ॐ महारेतसे स्वाहा

ॐ महाबलाय स्वाहा

ॐ स्ववर्णरेतसे स्वाहा

ॐ सर्वज्ञाय स्वाहा

ॐ सुबीजाय स्वाहा

ॐ बीजवाहनाय स्वाहा

ॐ दशबाहवे स्वाहा

ॐ अनिमिषाय स्वाहा
ॐ नीलकण्ठाय स्वाहा
ॐ उमापतये स्वाहा
ॐ विश्वरूपाय स्वाहा
ॐ स्वयंश्रेष्ठाय स्वाहा
ॐ बलवीराय स्वाहा
ॐ अबलाय स्वाहा
ॐ गणाय स्वाहा (प्रिय-देव)
ॐ गणकर्त्रे स्वाहा
ॐ गणपतये स्वाहा
ॐ दिग्वाससे स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमऽसि
ज्योतिरऽसि धामाऽसि

ॐ कामाय स्वाहा[१००]

ॐ मन्त्रविदे स्वाहा

ॐ परमाय स्वाहा

ॐ मन्त्राय स्वाहा

ॐ सर्वभावकराय स्वाहा

ॐ हराय स्वाहा

ॐ कमण्डलुधराय स्वाहा

ॐ धन्विने स्वाहा

ॐ बाणहस्ताय स्वाहा

ॐ कपालवते स्वाहा

ॐ अशनिने स्वाहा

ॐ शतघ्निने स्वाहा

ॐ खड्गिने स्वाहा

ॐ पट्टिसिने स्वाहा

ॐ आयुधिने स्वाहा

ॐ बृहते स्वाहा

ॐ स्रुवहस्ताय स्वाहा
ॐ स्वरूपाय स्वाहा
ॐ तेजसे स्वाहा
ॐ तेजस्कराय स्वाहा
ॐ निधये स्वाहा
ॐ उष्णीषिणे स्वाहा
ॐ सुवक्त्राय स्वाहा
ॐ उदग्राय स्वाहा
ॐ विनताय स्वाहा
ॐ दीर्घाय स्वाहा
ॐ हरिनेत्राय स्वाहा
ॐ सुतीक्ष्णाय स्वाहा
ॐ कृष्णाय स्वाहा
ॐ सृगालरूपाय स्वाहा
ॐ सिद्धार्थाय स्वाहा

ॐ मुण्डाय स्वाहा

ॐ सर्वशुभङ्कराय स्वाहा

ॐ अजाय स्वाहा

ॐ बहुरूपाय स्वाहा

ॐ गन्धधारिणे स्वाहा

ॐ कपर्दिने स्वाहा

ॐ ऊर्ध्वरेतसे स्वाहा

ॐ ऊर्ध्वलिङ्गाय स्वाहा

ॐ ऊर्ध्वशायिने स्वाहा

ॐ नभस्तलाय स्वाहा

ॐ त्रिजटिने स्वाहा

ॐ चीरवाससे स्वाहा

ॐ रुद्राय स्वाहा

ॐ सेनापतये स्वाहा

ॐ खगाय स्वाहा

ॐ अहश्चराय स्वाहा

ॐ नक्तञ्चराय स्वाहा

ॐ तिग्ममन्यवे स्वाहा

ॐ सुवर्चसाय स्वाहा

ॐ गजघ्ने स्वाहा

ॐ दैत्यघ्ने स्वाहा

ॐ कालाय स्वाहा

ॐ लोकधात्रे स्वाहा

ॐ गुणाकराय स्वाहा

ॐ सिंहशार्दूलरूपाय स्वाहा

ॐ आर्द्रचर्माम्बरावृताय स्वाहा

ॐ कालयोगिने स्वाहा

ॐ महानादाय स्वाहा

ॐ सर्वकामाय स्वाहा

ॐ चतुष्पथाय स्वाहा

ॐ निशाचराय स्वाहा

ॐ प्रेतचारिणे स्वाहा

ॐ भूतचारिणे स्वाहा

ॐ महेश्वराय स्वाहा

ॐ बहुरूपाय स्वाहा

ॐ बहुधराय स्वाहा

ॐ स्वर्भानवे स्वाहा

ॐ अमिताय स्वाहा

ॐ गतये स्वाहा

ॐ नृत्यप्रियाय स्वाहा

ॐ नृत्यतृप्ताय स्वाहा

ॐ नर्तकाय स्वाहा

ॐ सर्वलासकाय स्वाहा

ॐ घोराय स्वाहा

ॐ महातपसे स्वाहा

ॐ पाशाय स्वाहा

ॐ नित्याय स्वाहा

ॐ गिरिरुहाय स्वाहा

ॐ नभसे स्वाहा

ॐ सहस्त्रहस्ताय स्वाहा

ॐ विजयाय स्वाहा

ॐ व्यवसायाय स्वाहा

ॐ अतन्द्रिताय स्वाहा

ॐ अमर्षणाय स्वाहा

ॐ धर्षणात्मने स्वाहा

ॐ यज्ञेघ्ने स्वाहा

ॐ कामनाश्काय स्वाहा

ॐ दक्षयज्ञापहारिणे स्वाहा

ॐ स्ववर्णाय स्वाहा

ॐ मध्यमाय स्वाहा

ॐ तेजोपहारिणे स्वाहा

ॐ बलिघ्ने स्वाहा

ॐ मुदिताय स्वाहा

ॐ अर्थाय स्वाहा

ॐ अजिताय स्वाहा

ॐ अवराय स्वाहा

ॐ गम्भीरघोषाय स्वाहा

ॐ गम्भीराय स्वाहा

ॐ गम्भीरबलवाहनाय स्वाहा

ॐ न्यग्रोधरूपाय स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमऽसि
ज्योतिरऽसि धामाऽसि

ॐ न्यग्रोधाय स्वाहा २००

ॐ वृक्षकर्णस्थितये स्वाहा

ॐ स्वभुवे स्वाहा

ॐ सुतीक्ष्णदशनाय स्वाहा

ॐ महाकायाय स्वाहा

ॐ महाननाय स्वाहा

ॐ विष्वक्सेनाय स्वाहा

ॐ हरये स्वाहा

ॐ यज्ञाय स्वाहा

ॐ संयुगापीडवाहनाय स्वा०

ॐ तीक्ष्णतपसे स्वाहा

ॐ हर्यश्वाय स्वाहा

ॐ सहायाय स्वाहा

ॐ कर्मकालविदे स्वाहा

ॐ विष्णुप्रसादिताय स्वाहा

ॐ यज्वने स्वाहा

ॐ समुद्राय स्वाहा
ॐ वडवामुखाय स्वाहा
ॐ हुताशनसहायाय स्वाहा
ॐ प्रशान्तात्मने स्वाहा
ॐ हुताशनाय स्वाहा
ॐ उग्रतेजसे स्वाहा
ॐ महातेजसे स्वाहा
ॐ जयाय स्वाहा
ॐ विजयाय स्वाहा
ॐ कालविदे स्वाहा
ॐ ज्योतिषामयनाय स्वाहा
ॐ सिद्धये स्वाहा
ॐ सर्वविग्रहाय स्वाहा
ॐ शिखिने स्वाहा
ॐ मुण्डिने स्वाहा

ॐ जटिने स्वाहा

ॐ ज्वालिने स्वाहा

ॐ मुर्तिजाय स्वाहा

ॐ दुर्बलाय स्वाहा

ॐ बलिने स्वाहा

ॐ वैणविने स्वाहा

ॐ पणविने स्वाहा

ॐ तालिने स्वाहा

ॐ खलिने स्वाहा

ॐ कालकटंकटाय स्वाहा

ॐ नक्षत्रविग्रहमतये स्वाहा

ॐ गुणवृद्धिलयाय स्वाहा

ॐ अगमाय स्वाहा

ॐ प्रजापतये स्वाहा

ॐ विश्वबाहवे स्वाहा

ॐ विभागाय स्वाहा

ॐ सर्वतोमुखाय स्वाहा

ॐ विमोचनाय स्वाहा

ॐ सर्वगणाय स्वाहा

ॐ हिरण्यकवचोद्भवाय स्वाहा

ॐ मेढ्रजाय स्वाहा

ॐ बलचारिणे स्वाहा

ॐ महीचारिणे स्वाहा

ॐ सृताय स्वाहा

ॐ सर्वतूर्यनिनादिने स्वाहा

ॐ सर्वतोद्यपरिग्रहाय स्वाहा

ॐ व्यालरूपाय स्वाहा

ॐ गुहावासिने स्वाहा

ॐ हंसमालिने स्वाहा

ॐ तुरङ्गविदे स्वाहा

ॐ त्रिदशाय स्वाहा

ॐ त्रिपदीभूमये स्वाहा

ॐ सर्वबन्धविमोचकाय स्वाहा

ॐ असुरेन्द्राणांबन्धनाय स्वाहा

ॐ युधिशत्रुविनाशनाय स्वाहा

ॐ सांख्यप्रसादाय स्वाहा

ॐ दुर्वाससे स्वाहा

ॐ सर्वसाधुनिषेविताय स्वाहा

ॐ प्रस्कन्दनाय स्वाहा

ॐ विभागज्ञाय स्वाहा

ॐ अतुल्याय स्वाहा

ॐ यज्ञभागविदे स्वाहा

ॐ सर्वावासाय स्वाहा

ॐ सर्वचारिणे स्वाहा

ॐ सुवाससे स्वाहा

ॐ वासवोपमाय स्वाहा

ॐ हैमाय स्वाहा

ॐ हेमकराय स्वाहा

ॐ अज्ञाय स्वाहा

ॐ सर्वाधिारिणे स्वाहा

ॐ धरोत्तमाय स्वाहा

ॐ लोहिताक्षाय स्वाहा

ॐ महाक्षाय स्वाहा

ॐ विजयाक्षाय स्वाहा

ॐ विशारदाय स्वाहा

ॐ सङ्ग्रहाय स्वाहा

ॐ निग्रहाय स्वाहा

ॐ कर्त्रे स्वाहा

ॐ मृगचर्मनिवासनाय स्वाहा

ॐ मुख्याय स्वाहा

ॐ मुकुन्ददेहाय स्वाहा

ॐ काहलये स्वाहा

ॐ सर्वकामदाय स्वाहा

ॐ सर्वकामप्रसादाय स्वाहा

ॐ सुबलाय स्वाहा

ॐ बलरूपधृषे स्वाहा

ॐ सर्वकामवराय स्वाहा

ॐ वरदाय स्वाहा

ॐ सर्वतोमुखाय स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमऽसि
ज्योतिरऽसि धामाऽसि

ॐ आकाशनिर्विरूपाय
स्वाहा[३००]

ॐ निपातिने स्वाहा

ॐ अवशाय स्वाहा

ॐ खभुवे स्वाहा

ॐ रौद्ररूपाय स्वाहा

ॐ अंशुभ्य: स्वाहा

ॐ आदित्याय स्वाहा

ॐ बहुरश्मये स्वाहा

ॐ स्ववर्चसिने स्वाहा

ॐ वसुगाय स्वाहा

ॐ महावेगाय स्वाहा

ॐ मनोवेगाय स्वाहा

ॐ निशाचराय स्वाहा

ॐ सर्ववासिने स्वाहा

ॐ श्रियोवासिने स्वाहा

ॐ उपदेशकराय स्वाहा

ॐ हरये स्वाहा

ॐ मुनये स्वाहा

ॐ आत्मने स्वाहा

ॐ निरालोकाय स्वाहा

ॐ सम्भग्नाय स्वाहा

ॐ सहस्त्रदाय स्वाहा

ॐ पक्षिणे स्वाहा

ॐ पक्षिरूपाय स्वाहा

ॐ अतिदीप्ताय स्वाहा

ॐ विशांपतये स्वाहा

ॐ उन्मादाय स्वाहा

ॐ मदनाय स्वाहा

ॐ कामाय स्वाहा

ॐ अश्वत्थाय स्वाहा

ॐ अर्थकराय स्वाहा

ॐ यशसे स्वाहा

ॐ वामदेवाय स्वाहा

ॐ वामाय स्वाहा

ॐ प्राग्दक्षिणाय स्वाहा

ॐ वामनाय स्वाहा

ॐ सिद्धयोगिने स्वाहा

ॐ महर्षये स्वाहा

ॐ सिद्धार्थाय स्वाहा

ॐ सिद्धसाधकाय स्वाहा

ॐ भिक्षवे स्वाहा

ॐ भिक्षुरूपाय स्वाहा

ॐ विपणाय स्वाहा

ॐ मृदवे स्वाहा

ॐ अक्षयाय स्वाहा

ॐ महासेनाय स्वाहा

ॐ विशाखाय स्वाहा

ॐ षष्टिभागाय स्वाहा

ॐ गवाम्पतये स्वाहा

ॐ बज्रहस्ताय स्वाहा

ॐ प्रतिस्तम्भिने स्वाहा

ॐ सैन्यस्तभ्भनाय स्वाहा

ॐ गीतनृत्यकराय स्वाहा

ॐ तालाय स्वाहा

ॐ मधवे स्वाहा

ॐ मधुकलोचनाय स्वाहा

ॐ वाचस्पत्याय स्वाहा

ॐ वाजसनाय स्वाहा

ॐ नित्यमाश्रमपूजिताय स्वाहा

ॐ ब्रह्मचारिणे स्वाहा

ॐ लोकचारिणे स्वाहा

ॐ सर्वचारिणे स्वाहा
ॐ विचारविदे स्वाहा
ॐ ईशानाय स्वाहा
ॐ ईश्वराय स्वाहा
ॐ कालाय स्वाहा
ॐ निशाचारिणे स्वाहा
ॐ पिनाकधृषे स्वाहा
ॐ निमित्तस्थाय स्वाहा
ॐ निमित्ताय स्वाहा
ॐ शम्भवे स्वाहा
ॐ नन्दिकराय स्वाहा
ॐ हरये स्वाहा
ॐ नन्दीश्वराय स्वाहा
ॐ नन्दिने स्वाहा
ॐ नन्दनाय स्वाहा

ॐ नन्दिवर्धनाय स्वाहा

ॐ भगहारिणे स्वाहा

ॐ निहन्त्रे स्वाहा

ॐ कालाय स्वाहा

ॐ ब्रह्मविदांवराय स्वाहा

ॐ चतुर्मुखाय स्वाहा

ॐ महालिङ्गाय स्वाहा

ॐ चारूलिङ्गाय स्वाहा

ॐ लिङ्गाध्यक्षाय स्वाहा

ॐ सुराध्यक्षाय स्वाहा

ॐ लोकाध्यक्षाय स्वाहा

ॐ युगावहाय स्वाहा

ॐ बीजाध्यक्षाय स्वाहा

ॐ बीजकर्त्रे स्वाहा

ॐ अध्यात्मानुगतये स्वाहा

ॐ बलाय स्वाहा

ॐ इतिहासकराय स्वाहा

ॐ कल्पाय स्वाहा

ॐ गौतमाय स्वाहा

ॐ निशाकराय स्वाहा

ॐ दम्भाय स्वाहा

ॐ अदम्भाय स्वाहा

ॐ वैदम्भाय स्वाहा

ॐ वश्याय स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमऽसि
ज्योतिरऽसि धामाऽसि

ॐ वश्यकराय स्वाहा४००

ॐ कलये स्वाहा

ॐ लोककर्त्रे स्वाहा

ॐ पशुपतये स्वाहा

ॐ महाकर्त्रे स्वाहा

ॐ अनौषधाय स्वाहा

ॐ परमाक्षरमूर्तये स्वाहा

ॐ बलवत्ते स्वाहा

ॐ शक्राय स्वाहा

ॐ नीत्यै स्वाहा

ॐ अनीत्यै स्वाहा

ॐ शुद्धात्मने स्वाहा

ॐ शुद्धच्यमानाय स्वाहा

ॐ मनोगतये स्वाहा

ॐ बहुप्रसादाय स्वाहा

ॐ सुस्वप्नाय स्वाहा

ॐ धर्षणाय स्वाहा

ॐ अमित्रजिते स्वाहा

ॐ वेदकाराय स्वाहा

ॐ मन्त्रकाराय स्वाहा

ॐ विदुषे स्वाहा

ॐ समरमर्दनाय स्वाहा

ॐ महामेघनिवासिने स्वाहा

ॐ महाघोराय स्वाहा

ॐ वशीकराय स्वाहा

ॐ अग्निज्वालिने स्वाहा

ॐ महाज्वालिने स्वाहा

ॐ हुतिधूम्राय स्वाहा

ॐ हुताय स्वाहा

ॐ हविषे स्वाहा

ॐ वृषणाय स्वाहा

ॐ शङ्कराय स्वाहा

ॐ नित्यंवर्चस्विने स्वाहा

ॐ धूमकेतनाय स्वाहा

ॐ नीलाय स्वाहा

ॐ सर्वाङ्गलुब्धाय स्वाहा

ॐ शोभनाय स्वाहा

ॐ निरवग्रहाय स्वाहा

ॐ स्वस्तिदाय स्वाहा

ॐ स्वस्तिभोगाय स्वाहा

ॐ भागिने स्वाहा

ॐ भागकराय स्वाहा

ॐ लघवे स्वाहा

ॐ उत्सङ्गाय स्वाहा

ॐ महाङ्गाय स्वाहा

ॐ महागर्भपरायणाय स्वाहा

ॐ कृष्णवर्णाय स्वाहा

ॐ सुवर्णाय स्वाहा

ॐ सर्वदेहिनामिन्द्रियाय स्वा०

ॐ महापादाय स्वाहा

ॐ महाहस्ताय स्वाहा

ॐ महाकायाय स्वाहा

ॐ महायशसे स्वाहा

ॐ महामूर्द्धने स्वाहा

ॐ महामात्राय स्वाहा

ॐ महानेत्राय स्वाहा

ॐ महालयाय स्वाहा

ॐ महादन्ताय स्वाहा

ॐ महाकर्णाय स्वाहा

ॐ महामेढ्राय स्वाहा

ॐ महाहनवे स्वाहा

ॐ महासेनाय स्वाहा

ॐ महाकम्बवे स्वाहा

ॐ महाग्रीवाय स्वाहा

ॐ श्मशानधृते स्वाहा

ॐ महावक्षसे स्वाहा

ॐ महोरस्काय स्वाहा

ॐ अन्तरात्मने स्वाहा

ॐ मृगालयाय स्वाहा

ॐ महाकोटये स्वाहा

ॐ महान्तकाय स्वाहा

ॐ महौष्ठाय स्वाहा

ॐ महानासाय स्वाहा

ॐ लम्बनाय स्वाहा

ॐ लम्बितौष्ठाय स्वाहा

ॐ महामायाय स्वाहा

ॐ पयोनिधये स्वाहा

ॐ महाङ्गाय स्वाहा

ॐ महादंष्ट्राय स्वाहा

ॐ महाजिह्वाय स्वाहा

ॐ महामुखाय स्वाहा

ॐ महानखाय स्वाहा

ॐ महारोम्णे स्वाहा

ॐ महाकेशाय स्वाहा

ॐ महाजटाय स्वाहा

ॐ असपत्नाय स्वाहा

ॐ प्रसादाय स्वाहा

ॐ प्रत्ययाय स्वाहा

ॐ गिरिसादनाय स्वाहा

ॐ स्नेहनाय स्वाहा

ॐ अस्नेहनाय स्वाहा

ॐ अजिताय स्वाहा

ॐ महामुनये स्वाहा

ॐ वृक्षाकाराय स्वाहा

ॐ वृक्षहेतवे स्वाहा

ॐ अनलाय स्वाहा

ॐ वायुवाहनाय स्वाहा

ॐ मण्डलिने स्वाहा

ॐ मेरुधाम्ने स्वाहा

ॐ वेदवेदाङ्गदर्पघ्ने स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमऽसि
ज्योतिरऽसि धामाऽसि

ॐ अथर्वशीर्ष्णो स्वाहा५००

ॐ सामास्याय स्वाहा

ॐ ऋक्सहस्रामितेक्षणाय स्वा०

ॐ यजु:पादभुजाय स्वाहा

ॐ गुह्याय स्वाहा

ॐ प्रकाशाय स्वाहा

ॐ जङ्गमाय स्वाहा

ॐ अमोघार्थाय स्वाहा

ॐ अभिगम्याय स्वाहा

ॐ स्वदर्शनाय स्वाहा

ॐ उपहारप्रियाय स्वाहा

ॐ सर्वकनकाय स्वाहा

ॐ काञ्चनच्छवये स्वाहा

ॐ नन्दिने स्वाहा

ॐ नन्दिकराय स्वाहा

ॐ भव्याय स्वाहा

ॐ पुष्करस्थाय स्वाहा

ॐ वृषस्थिराय स्वाहा

ॐ द्वापरत्रासनाय स्वाहा

ॐ आद्याय स्वाहा

ॐ यज्ञाय स्वाहा

ॐ यज्ञसमाहिताय स्वाहा

ॐ नक्तञ्चराय स्वाहा

ॐ कालाय स्वाहा

ॐ मकराय स्वाहा

ॐ कालपूजिताय स्वाहा

ॐ सुगणाय स्वाहा

ॐ गणकार्याय स्वाहा

ॐ भूतवाहनसारथये स्वाहा

ॐ भस्मशायिने स्वाहा

ॐ भस्मगोप्त्रे स्वाहा

ॐ भस्मरूपाय स्वाहा

ॐ तरवे स्वाहा

ॐ गणाय स्वाहा

ॐ लोकपालाय स्वाहा

ॐ अलोकाय स्वाहा

ॐ महात्मने स्वाहा

ॐ सर्वपूजिताय स्वाहा

ॐ शुक्लाय स्वाहा

ॐ त्रिशुक्लाय स्वाहा

ॐ सम्पन्नाय स्वाहा

ॐ शुचये स्वाहा

ॐ भूतनिषेविताय स्वाहा

ॐ आश्रमस्थाय स्वाहा

ॐ कपोतस्थाय स्वाहा

ॐ विश्वकर्मपतये स्वाहा

ॐ वराय स्वाहा

ॐ विशालशाखाय स्वाहा

ॐ ताम्रौष्ठाय स्वाहा
ॐ अम्बुजाक्षाय स्वाहा
ॐ सुनिश्चलाय स्वाहा
ॐ कपिलाय स्वाहा
ॐ कपिलकेशाय स्वाहा
ॐ आयुषे स्वाहा
ॐ परात्पराय स्वाहा
ॐ गन्धर्वाय स्वाहा
ॐ अदितये स्वाहा
ॐ तार्क्ष्याय स्वाहा
ॐ सुविज्ञेयाय स्वाहा
ॐ सुशारदाय स्वाहा
ॐ परश्वधायुधाय स्वाहा
ॐ देवाय स्वाहा
ॐ अर्थकारिणे स्वाहा

ॐ स्वबान्धवाय स्वाहा

ॐ तुम्बवीणाय स्वाहा

ॐ महाकोपाय स्वाहा

ॐ ऊर्ध्वरितसे स्वाहा

ॐ जलेशयाय स्वाहा

ॐ उग्रवंशकराय स्वाहा

ॐ वंशाय स्वाहा

ॐ वंशनादाय स्वाहा

ॐ अनिन्दिताय स्वाहा

ॐ सर्वाङ्गरूपिणे स्वाहा

ॐ मायाविने स्वाहा

ॐ सुहृदाय स्वाहा

ॐ अनिलाय स्वाहा

ॐ अनलाय स्वाहा

ॐ बन्धनाय स्वाहा

ॐ बन्धकर्त्रे स्वाहा
ॐ सुबन्धनविमोचनाय स्वा॰
ॐ सयज्ञारये स्वाहा
ॐ सकामारये स्वाहा
ॐ महादंष्ट्रोद्धृतरिपवे स्वा॰
ॐ बहुधानिन्दिताय स्वा॰
ॐ सर्वाय स्वाहा
ॐ शंकराय स्वाहा
ॐ शम्बराय स्वाहा
ॐ अधनाय स्वाहा
ॐ अमरेशाय स्वाहा
ॐ महादेवाय स्वाहा
ॐ विश्वरूपाय स्वाहा
ॐ सुरारिघ्ने स्वाहा
ॐ अहिबुध्न्याय स्वाहा

ॐ अनिलाभाय स्वाहा

ॐ चिकितानाय स्वाहा

ॐ हविषे स्वाहा

ॐ अजैकपादे स्वाहा

ॐ कापालिने स्वाहा

ॐ त्रिशंकुवे स्वाहा

ॐ अजिताय स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमऽसि
ज्योतिरऽसि धामाऽसि

ॐ शिवाय स्वाहा ६००

ॐ धान्वन्तरये स्वाहा

ॐ धूमकेतवे स्वाहा

ॐ स्कन्दाय स्वाहा

ॐ वैश्रवणोपमाय स्वाहा

ॐ धात्रे स्वाहा

ॐ शक्राय स्वाहा

ॐ विष्णवे स्वाहा

ॐ मित्राय स्वाहा

ॐ त्वष्ट्रे स्वाहा

ॐ ध्रुवाय स्वाहा

ॐ वसवे स्वाहा

ॐ प्रभावाय स्वाहा

ॐ सर्वगाय स्वाहा

ॐ वायवे स्वाहा

ॐ अर्यम्णे स्वाहा

ॐ सवित्रे स्वाहा

ॐ रवये स्वाहा

ॐ उषङ्गाय स्वाहा

ॐ विधात्रे स्वाहा

ॐ सन्धात्रे स्वाहा

ॐ भूतभावनाय स्वाहा

ॐ अतितीक्ष्णाय स्वाहा

ॐ हराय स्वाहा

ॐ वाग्मिने स्वाहा

ॐ सर्वकामगुणावहाय स्वा

ॐ पद्मवक्त्राय स्वाहा

ॐ महावक्त्राय स्वाहा

ॐ चन्द्रवक्त्राय स्वाहा

ॐ मनोरमाय स्वाहा

ॐ बलवते स्वाहा

ॐ उपशान्ताय स्वाहा

ॐ पुराणाय स्वाहा

ॐ पुण्यचञ्चवे स्वाहा

ॐ कुरुकर्त्रे स्वाहा

ॐ कुलावासिने स्वाहा

ॐ कुरुभूताय स्वाहा

ॐ गुणौषधाय स्वाहा

ॐ सर्वाशयाय स्वाहा

ॐ दर्भशायिने स्वाहा

ॐ सर्वेषांप्राणिनांपतये स्वा०

ॐ देवदेवाय स्वाहा

ॐ सुखासक्ताय स्वाहा

ॐ सदसते स्वाहा

ॐ सर्वरत्नविदे स्वाहा

ॐ कैलासशिखरावासिने स्वा०

ॐ हिमवद्गिरिसंश्रयाय स्वा०

ॐ कुलहारिणे स्वाहा

ॐ कुलकर्त्रे स्वाहा

ॐ बहुविद्याय स्वाहा
ॐ बहुप्रदाय स्वाहा
ॐ वाणिज्याय स्वाहा
ॐ वर्धकिने स्वाहा
ॐ वृक्षाय स्वाहा
ॐ बकुलाय स्वाहा
ॐ चन्दनच्छदाय स्वाहा
ॐ सारग्रीवाय स्वाहा
ॐ महाजत्रवे स्वाहा
ॐ अलोलाय स्वाहा
ॐ महौषधये स्वाहा
ॐ सिद्धार्थकारिणे स्वाहा
ॐ सिद्धार्थाय स्वाहा
ॐ छन्दोव्याकरणान्तगाय स्वा॰
ॐ सिंहनादाय स्वाहा

ॐ सिंहदंष्ट्राय स्वाहा

ॐ सिंहगाय स्वाहा

ॐ सिंहवाहनाय स्वाहा

ॐ प्रभावात्मने स्वाहा

ॐ जगत्कालाय स्वाहा

ॐ तालिने स्वाहा

ॐ लोकहिताय स्वाहा

ॐ तरवे स्वाहा

ॐ सारङ्गाय स्वाहा

ॐ नवचक्राङ्गाय स्वाहा

ॐ केतुमालिने स्वाहा

ॐ सुभावनाय स्वाहा

ॐ भूतालयाय स्वाहा

ॐ भूतपतये स्वाहा

ॐ अहोरात्रमनिन्दिताय स्वा०

ॐ सर्वभूतानांवाहित्रे स्वा०
ॐ सर्वभूतानांनिलयाय स्वा०
ॐ करभुवे स्वाहा
ॐ भवाय स्वाहा
ॐ अमोघाय स्वाहा
ॐ संयुताय स्वाहा
ॐ अश्वाय स्वाहा
ॐ भोजनाय स्वाहा
ॐ प्राणधारणाय स्वाहा
ॐ धृतिमते स्वाहा
ॐ मतिमते स्वाहा
ॐ दक्षाय स्वाहा
ॐ सत्कृताय स्वाहा
ॐ युगाधिपाय स्वाहा
ॐ गोपालाय स्वाहा

ॐ गोपतये स्वाहा

ॐ ग्रामाय स्वाहा

ॐ गोचर्मवसनाय स्वाहा

ॐ हरये स्वाहा

ॐ हिरण्यबाहवे स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमऽसि
ज्योतिरऽसि धामाऽसि

ॐ गुहापालाय स्वाहा ७००

ॐ प्रवेशिनांत्रात्रे स्वाहा

ॐ प्रकृष्टारये स्वाहा

ॐ महाहर्षाय स्वाहा

ॐ जितकामाय स्वाहा

ॐ जितेन्द्रयाय स्वाहा

ॐ गान्धाराय स्वाहा

ॐ सुवाससे स्वाहा

ॐ तपसे स्वाहा

ॐ कर्मरतये स्वाहा

ॐ नराय स्वाहा

ॐ महागीताय स्वाहा

ॐ महानृत्याय स्वाहा

ॐ अप्सरोगणसेविताय स्वा०

ॐ महाकेतवे स्वाहा

ॐ धनुषे स्वाहा

ॐ धातवे स्वाहा

ॐ नैकसानुचराय स्वाहा

ॐ चलाय स्वाहा

ॐ आवेदनीयाय स्वाहा

ॐ आदेशाय स्वाहा

ॐ सर्वगन्धसुखावहाय स्वा०

ॐ तोरणाय स्वाहा

ॐ तारणाय स्वाहा

ॐ वाताय स्वाहा

ॐ परिधिपतये स्वाहा

ॐ खेचराय स्वाहा

ॐ संयोगवर्धनाय स्वाहा

ॐ वृद्धाय स्वाहा

ॐ महावृद्धाय स्वाहा

ॐ गुणाधिपाय स्वाहा

ॐ नित्यंधर्मसहायाय स्वाहा

ॐ देवासुरपतये स्वाहा

ॐ रतये स्वाहा

ॐ युक्ताय स्वाहा

ॐ युक्तबाहवे स्वाहा

ॐ त्रिदशाय स्वाहा
ॐ सुपर्वणाय स्वाहा
ॐ आषाढाय स्वाहा
ॐ सुषाढाय स्वाहा
ॐ ध्रुवाय स्वाहा
ॐ हरिणाय स्वाहा
ॐ हराय स्वाहा
ॐ वपुषे स्वाहा
ॐ आवर्तनाय स्वाहा
ॐ नित्याय स्वाहा
ॐ वसुश्रेष्ठाय स्वाहा
ॐ महारथाय स्वाहा
ॐ शिरोहारिणे स्वाहा
ॐ विमर्षिणे स्वाहा
ॐ सर्वलक्षणलक्षिताय स्वा॰

ॐ अक्षराय स्वाहा

ॐ क्षराय स्वाहा

ॐ योगिने स्वाहा

ॐ सर्वयोगिने स्वाहा

ॐ महाबलाय स्वाहा

ॐ समाम्नायाय स्वाहा

ॐ असमाम्नायाय स्वाहा

ॐ तीर्थदेवाय स्वाहा

ॐ महाद्युतये स्वाहा

ॐ निर्जीवाय स्वाहा

ॐ जीवनाय स्वाहा

ॐ मन्त्राय स्वाहा

ॐ अनिन्दिताय स्वाहा

ॐ बहुकर्कशाय स्वाहा

ॐ रत्नप्रभूताय स्वाहा

ॐ रक्ताङ्गाय स्वाहा
ॐ महार्णव निनादभृते स्वा
ॐ मूलाय स्वाहा
ॐ विशालाय स्वाहा
ॐ अमृताय स्वाहा
ॐ व्यक्ताव्यक्ताय स्वाहा
ॐ तपोनिधये स्वाहा
ॐ आरोहणाय स्वाहा
ॐ अधिरोहाय स्वाहा
ॐ शीलधारिणे स्वाहा
ॐ महातपसे स्वाहा
ॐ सेनाकल्पाय स्वाहा
ॐ महाकल्पाय स्वाहा
ॐ योगाय स्वाहा
ॐ युगकराय स्वाहा

ॐ गतये स्वाहा

ॐ युगरूपाय स्वाहा

ॐ महारूपाय स्वाहा

ॐ पवनाय स्वाहा

ॐ गहनाय स्वाहा

ॐ अवधाय स्वाहा

ॐ न्यायनिर्वापणाय स्वा०

ॐ पादाय स्वाहा

ॐ पण्डिताय स्वाहा

ॐ अचलोपमाय स्वाहा

ॐ बहुमालाय स्वाहा

ॐ महामालाय स्वाहा

ॐ सुमालाय स्वाहा

ॐ बहुलोचनाय स्वाहा

ॐ विस्ताराय स्वाहा

ॐ लवणाय स्वाहा

ॐ क्रूराय स्वाहा

ॐ कुसुमाय स्वाहा

ॐ सुफलोदयाय स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमऽसि
ज्योतिरऽसि धामाऽसि

ॐ वृषभाय स्वाहा८००

ॐ वृषभाङ्गाय स्वाहा

ॐ मणिविद्धाय स्वाहा

ॐ जटाधराय स्वाहा

ॐ इन्द्राय स्वाहा

ॐ विसर्गाय स्वाहा

ॐ सुमुखाय स्वाहा

ॐ शराय स्वाहा

ॐ सर्वायुधाय स्वाहा

ॐ सहसे स्वाहा

ॐ निवेदनाय स्वाहा

ॐ सुधन्वने स्वाहा

ॐ सुगन्धाढ्याय स्वाहा

ॐ महाधनुषे स्वाहा

ॐ गन्धमालिने स्वाहा

ॐ भाग्यवते स्वाहा

ॐ सर्वकर्मणामुत्थानाय स्वा०

ॐ मन्थाङ्नाय स्वाहा

ॐ बहुलाय स्वाहा

ॐ बाहवे स्वाहा

ॐ सकलाय स्वाहा

ॐ सर्वलोचनाय स्वाहा

ॐ नराय स्वाहा

ॐ तालाय स्वाहा

ॐ करस्थालिने स्वाहा

ॐ ऊर्ध्वसंहननाय स्वाहा

ॐ वहाय स्वाहा

ॐ वृत्रपतये स्वाहा

ॐ सुविख्याताय स्वाहा

ॐ लोकाय स्वाहा

ॐ सर्वाश्रयाय स्वाहा

ॐ क्रमाय स्वाहा

ॐ मुण्डाय स्वाहा

ॐ विरूपाय स्वाहा

ॐ विकृताय स्वाहा

ॐ दण्डिने स्वाहा

ॐ कुण्डिने स्वाहा

ॐ विकुर्वाणाय स्वाहा

ॐ हर्यक्षाय स्वाहा

ॐ ककुभाय स्वाहा

ॐ वज्रिणे स्वाहा

ॐ शतजिह्वाय स्वाहा

ॐ सहस्त्रपादे स्वाहा

ॐ सहस्त्रमूर्ध्ने स्वाहा

ॐ देवेन्द्राय स्वाहा

ॐ सर्वभूतमयाय स्वाहा

ॐ गुरवे स्वाहा

ॐ सहस्त्रबाहवे स्वाहा

ॐ सर्वाङ्गाय स्वाहा

ॐ शरण्याय स्वाहा

ॐ सर्वलोककृते स्वाहा

ॐ विपन्नाशाय स्वाहा

ॐ मधवे स्वाहा

ॐ मन्त्राय स्वाहा

ॐ कनिष्ठाय स्वाहा

ॐ कृष्णपिङ्गलाय स्वाहा

ॐ ब्रह्मदण्डविनिमात्रे स्वा०

ॐ शतघ्नीशतपाशभृते स्वा०

ॐ पद्मगर्भाय स्वाहा

ॐ महागर्भाय स्वाहा

ॐ ब्रह्मगर्भाय स्वाहा

ॐ जलोद्भवाय स्वाहा

ॐ गभस्तिने स्वाहा

ॐ ब्रह्मकृते स्वाहा

ॐ ब्रह्मणे स्वाहा

ॐ ब्रह्मविदे स्वाहा

ॐ ब्राह्मणाय स्वाहा

ॐ गतये स्वाहा

ॐ अनन्तरूपाय स्वाहा

ॐ अनेकात्मने स्वाहा

ॐ तिग्मांश्वे स्वाहा

ॐ आत्मसम्भवाय स्वाहा

ॐ ऊर्ध्वगात्मने स्वाहा

ॐ पशुपतये स्वाहा

ॐ वातरंहसे स्वाहा

ॐ मनोजवाय स्वाहा

ॐ चन्दनाय स्वाहा

ॐ पद्ममालाग्ग्राय स्वाहा

ॐ अगण्याय स्वाहा

ॐ अन्तरंगाय स्वाहा

ॐ अन्तराय स्वाहा

ॐ कर्णिकारमहास्त्रग्विणे स्वा०

ॐ नीलमौलये स्वाहा

ॐ पिनाकधृगे स्वाहा

ॐ उमापतये स्वाहा

ॐ उमाकान्ताय स्वाहा

ॐ जाह्नवीभृते स्वाहा

ॐ अनम्बराय स्वाहा

ॐ वराय स्वाहा

ॐ वराहाय स्वाहा

ॐ वरदाय स्वाहा

ॐ वरेशाय स्वाहा

ॐ सुमहास्तनाय स्वाहा

ॐ महाप्रसादाय स्वाहा

ॐ दमनाय स्वाहा

ॐ शत्रुध्ने स्वाहा

ॐ श्वेतपिङ्गलाय स्वाहा

ॐ प्रीतात्मने स्वाहा

ॐ परमात्मने स्वाहा

ॐ प्रयतात्मने स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमऽसि
ज्योतिरऽसि धामाऽसि

ॐ प्रधानभृते स्वाहा १००

ॐ सर्वपार्श्वसुताय स्वाहा

ॐ ताक्षार्य स्वाहा

ॐ धर्मसाधारणाय स्वाहा

ॐ अचलाय स्वाहा

ॐ चराचरात्मने स्वाहा

ॐ सूक्ष्माय स्वाहा

ॐ अमृताय स्वाहा

ॐ गोवृषेश्वराय स्वाहा

ॐ साध्यर्षये स्वाहा

ॐ कृषये स्वाहा

ॐ आदित्याय स्वाहा

ॐ विवस्वते स्वाहा

ॐ सवित्रे स्वाहा

ॐ अमृताय स्वाहा

ॐ व्यासाय स्वाहा

ॐ सर्वस्यसंक्षेपाय स्वा०

ॐ सर्वस्यविस्ताराय स्वा०

ॐ पर्ययाय स्वाहा

ॐ अनराय स्वाहा

ॐ ऋतुभ्यः स्वाहा

ॐ संवत्सराय स्वाहा

ॐ मासेभ्यः स्वाहा

ॐ पक्षाभ्यां स्वाहा

ॐ सांख्यसमापनाय स्वा०

ॐ कलाभ्यः स्वाहा

ॐ काष्ठाभ्यः स्वाहा

ॐ लवेभ्यः स्वाहा

ॐ मात्राभ्यः स्वाहा

ॐ मुहूर्ताय स्वाहा

ॐ अह्ने स्वाहा

ॐ क्षणदायै स्वाहा

ॐ क्षणेभ्यः स्वाहा

ॐ विश्वक्षेत्राय स्वाहा

ॐ प्रजाबीजाय स्वाहा

ॐ लिङ्गाय स्वाहा

ॐ आद्याय स्वाहा

ॐ निर्गमाय स्वाहा

ॐ सते स्वाहा

ॐ असते स्वाहा

ॐ व्यक्ताय स्वाहा

ॐ अव्यक्ताय स्वाहा

ॐ पित्रे स्वाहा

ॐ मात्रे स्वाहा

ॐ पितामहाय स्वाहा

ॐ स्वर्गद्वाराय स्वाहा

ॐ प्रजाद्वाराय स्वाहा

ॐ मोक्षद्वाराय स्वाहा

ॐ त्रिविष्टपाय स्वाहा

ॐ निर्वाणाय स्वाहा

ॐ ह्लादनाय स्वाहा

ॐ ब्रह्मलोकाय स्वाहा

ॐ परागतये स्वाहा

ॐ देवासुरविनिर्मात्रे स्वाहा

ॐ देवासुरपरायणाय स्वाहा

ॐ देवासुरगुरवे स्वाहा

ॐ देवाय स्वाहा

ॐ देवासुरनमस्कृताय स्वाहा

ॐ देवासुरमहामात्राय स्वाहा

ॐ देवासुरमहाश्रयाय स्वाहा

ॐ देवासुरमहाध्यक्षाय स्वाहा

ॐ देवासुरगणाग्रण्ये स्वाहा

ॐ देवातिदेवाय स्वाहा

ॐ देवर्षये स्वाहा

ॐ देवासुरसुपूजिताय स्वाहा

ॐ देवासुरेश्वराय स्वाहा

ॐ विश्वस्मै स्वाहा

ॐ देवासुरमहेश्वराय स्वाहा

ॐ सर्वदेवमयाय स्वाहा
ॐ अचिन्त्याय स्वाहा
ॐ देवात्मने स्वाहा
ॐ अर्थसाधकाय स्वाहा
ॐ उद्भिदे स्वाहा
ॐ त्रिविक्रमाय स्वाहा
ॐ वैद्याय स्वाहा
ॐ विरजसे स्वाहा
ॐ विरजोम्बराय स्वाहा
ॐ ईड्याय स्वाहा
ॐ हस्तीश्वराय स्वाहा
ॐ व्याघ्राय स्वाहा
ॐ देवसिंहाय स्वाहा
ॐ नरर्षभाय स्वाहा
ॐ विबुधाग्रवरश्रेष्ठाय स्वा०

ॐ सर्वदेवोत्तमोत्तमाय स्वाहा

ॐ गुहाकान्ताय स्वाहा

ॐ अतिनिसर्गाय स्वाहा

ॐ स्वनाम्नासर्वपावनाय स्वाहा

ॐ शृङ्गिणे स्वाहा

ॐ शृङ्गिप्रियाय स्वाहा

ॐ बभ्रवे स्वाहा

ॐ राजराजातिपूजिताय स्वाहा

ॐ अभिरामाय स्वाहा

ॐ सुरगणातिरामाय स्वाहा

ॐ सर्वसाधनाय स्वाहा

ॐ ललाटाक्षाय स्वाहा

ॐ विश्वदेवाय स्वाहा

ॐ सर्वाधिब्रह्मवर्चस्विने स्वाहा

ॐ स्थावराणांपतये स्वाहा

ॐ नियतेन्द्रियवर्धनाय स्वाहा

ॐ सिद्धार्थाय स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमऽसि
ज्योतिरऽसि धामाऽसि

ॐ सर्वभूतार्थाय
स्वाहा१०००

विजयेश्वर-ज्योतिष कार्यालय से छपी
पुस्तकें मिलने के पते :-

1. विजयेश्वर धार्मिक पुस्तक भण्डार
तालाब तिलो जम्मू

2. जे. के. बुक शाप
तालाब तिलो जम्मू

3. भसीन स्टेशनरी स्टोर
पक्का-ढंगा जम्मू

4. यूनिवर्सल निवज़ एज़न्सी
उधमपुर - जम्मू

5. देहली में
तनेजा एलकट्रिक्लज़ एण्ड टय्ट हाऊस
रघुनाथ बाजार अमरकालोनी
लाजपतनगर-देहली - 6429046
शाप नं. 45 ब्रह्मपुत्र शापिंग कम्पलेक्स
सैक्टर - 29 नयोडा - देहली